प्रयोजनमूलक हिंदी

बी.ए. द्वितीय वर्ष

(पेपर क्र. VIII)

सत्र – चतुर्थ (Semester – IV)

8.3.1 पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विविध दृष्टिकोण एवं प्रयास

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विविध दृष्टिकोण एवं प्रयास

प्रस्तावना :-

जब देश स्वतंत्र हुआ तब प्रशासन का उत्तरदायित्व ऐसे लोगों ने ग्रहण किया जिनकी शिक्षा दीक्षा अंग्रेजी के माध्यम से हुई थी। इन लोगों को शासन का काम - काज अंगेजी में चलाना अधिक सुविधाजनक लगता था। अपनी सुविधा के चलते ऐसे लोगों ने न तो हिंदी सीखने का यत्न किया और न स्वदेशी भाषा के प्रति आसक्ति या निष्ठा दिखाई। यही दुर्भाग्य की बात थी। समय की मांग तो थी कि स्वतंत्र भारत की अपनी एक राजभाषा हो और अखिल भारतीय स्तर पर सर्वमान्य पारिभाषिक शब्दावाली इस भाषा में समृद्ध की जाए ; लेकिन क्या हुआ ? संविधन में कुछ लोगों के प्रयास से हिंदी को भारत की राजभाषा एवं संपर्क भाषा बनाए जाने की व्यवस्था तो कर दी गई , किंतु व्यवहार में अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी को लाने के लिए उन नेताओं अथवा अधिकारियों ने कोई उत्साह नहीं दिखाया और न अपेक्षित गति से कार्य किया। उन लोगों का भ्रम था कि हिंदी काफी सीखने में व्यर्थ परिश्रम करना होगा , योरूप में विकसित ज्ञान - विज्ञान और आधुनिक विचारों से हम अपिरिचित रहे जायेंगे , पिछड़ जाएंगे इ .।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की विविध दृष्टिकोण एवं प्रयास

अपनी असुविधा , अज्ञान और दुर्बलता को छिपाने के लिए , अपने को विशिष्ट बनाये रखने के लिए ऐसे लोगों ने तर्क दिया कि वैज्ञानिक तथा तकनिकी विषयों को अध्ययन हिंदी तथ भारतीय भाषाओं के माध्यम से करना अभी संभव नहीं है , क्योंकि अभी इन भाषाओं में नये विचारों का अभिव्यक्त करने के लिए पारिभषिक शब्दावली का अभव है। जब भारत में हर विषय की पर्याप्त शब्दावलियाँ बन जायेंगी और उनका प्रयोग करते। हुए संख्या में पाठयपुस्तकों की रचना हो जाएगी , तब हिंदी एवं भारतीय भाषाओं की शिक्षा का माध्यम बना दिया जाएगा। इस निरंतर टालने वाले तर्क के चलते पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का कार्य बहुत धीमी गति से हुआ या योजनाबद्ध तरीके से नहीं हुआ। यदि ऐसे प्रयास किए भी गए तो उन्हें प्रोत्साहन नहीं दिया गया। उपर्युक्त मानसिक वातावरण में पारिभाषिक शब्दावली के विषय में चार विचारधाराओं का उदय हुआ।

१) शुद्धतावादी विचारधारा :-

पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण शुद्ध रूप से संस्कृत व्याकरण तथा शब्द - संपदा के आधार पर किया जाए। इस वर्ग के प्रबल समर्थक थे प्रो . रघुवीर जी। चौथे दशक के उत्तरार्द्ध तथा पांचवें दशक के पूर्वार्द्ध में उन्होंने बड़े ही वैज्ञानिक बंग से अखिल भारतीय पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण भी किया । उनका विख्यात कोश Comprehensive English Hindi Dictionary आज भी इस दिशा में एक आदर्श है। डॉ . रघुवीर कहना था कि शब्द और विचार अभिन्न है , इसीलिए जब विचार नया होगा तो उसके लिए नये शब्द की आवश्यकता भी आवश्य होगी। परंतु ये नए बने शब्द पारदर्शक भी हो सकते है और रंगीन भी। जो भाषाएँ विजातीय है। और जिनकी जड़ें हमारी धरती से नहीं उपजी हैं उनके शब्द हमारे लिए उधार के शब्द होते हैं और इसीलिए रंगीन शीशे की तरह धूमिल होते हैं। उनके पार सायास देखना पड़ता है।

१) शुद्धतावादी विचारधारा :-

अंग्रेजी के शब्द हमारे लिए ऐसे ही उधार के और धूमिल शब्द हैं क्योंकि उनकी जड़ें पीक और लैटिन भाषाओं में हैं । इसके विपरीत संस्कृत हमारी अपनी भाषा है । लगभग सभी भारतीय भाषाओं में (उर्दू , और कुछ सीमा तक तमिल को छोडकर) उसकी जड़ें फैली हुई है । इसीलिए उसके आधार पर बनाए गए शब्द हमारे लिए स्पष्ट और पारदर्शी होंगे । यदि किसी को संस्कृत व्याकरण का थोड़ा - सा भी ज्ञान हो जाए तो नए शब्दों के अर्थ उसके लिए सहज एवं सुबोध हो जाएंगे । आवश्यकता है केवल शब्द निर्माण की पद्धति को एक बार अच्छी तरह समझ लेने की । लेकिन संस्कृत भाषा की शक्ति और वैज्ञानिकता से अपरिचित , अंग्रेजी माध्यम से पढ़े - लिखे और उर्दू - फारसी के पक्षधर भारतीय नागरिकोंने डॉ . रघुवीर के विचारों का विरोध किया । उनके वैज्ञानिक विचारों को अपनी अज्ञानता के कारण वे लोग ठीक समझ नहीं सके , और संस्कृतनिष्ठ हिंदी का नाम ही ऐसे लोगों ने ' रघुवीरी हिंदी ' रख दिया ।

२) स्वीकारवादी विचारधारा :-

नव विकसित पाश्चात्य ज्ञान को अविलंब मसझने के लिए अंग्रजी शब्दावाली को ज्यों - का - त्यों ग्रहण कर लिया जाए । इस वर्ग के पक्षधरों का मानना है कि पहले अंतर्राष्ट्रीय प्रयोग में आनेवाली शब्दावली को मूल रूप में ले लिया जाए । इस बात को ध्यान से देखना पड़ेगा कि क्या अंग्रेजी अंतर्राष्ट्रीय भाषा है ? और अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली क्या है ? डॉ . गार्गी गप्त ने ऐतिहासिक तथ्यों का उल्लेख करते हुए इसका सही उत्तर दिया है , जिससे हमारी सहमति है । उनके अनुसार , ' अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वस्तुत : अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली जैसी कोई धरण योरोप में कभी थी ही नहीं । इस शब्द का प्रयोग हमें सबसे पहले आने देश में ही मिलता है । सबसे पहले इसकी बनियाद १ ९ ४० में उस समय पड़ी , जब भारत सरकार ने वैज्ञानिक शब्दावली पर विचार करने के लिए अकबर हैदरी की वैज्ञानिक विकास के साथ आवश्यक संपर्क बनाए रखने के लिए भारत में ऐसी वैज्ञानिक शब्दावली अपनाई जानी चाहिए जो अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में आमतौर पर स्वीकार किए गए शब्दों को अधिक - से अधिक स्वीकार कर लें । ' अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सामान्यतौर पर स्वीकृत शब्दों में अर्थ में ।

२) स्वीकारवादी विचारधारा :-

अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली का प्रयोग सर्वप्रथम मौलाना अब्दुल कलाम आजाद ने किया १९४८ में विश्वविद्यालयों के कुलपतियों तथा विशेषज्ञों की समिति की एक सभा में उन्होंने कहा था, "वैज्ञानिक शब्दावली की समस्या अत्यंत महत्त्वपूर्ण समस्या है परंतु केंद्रीय सलाहाकर बोर्ड ने उसे यह मानकर हल करने की कोशिश की है कि वैज्ञानिक शब्द अंतर्राष्ट्रीय है और उनका अनुवाद करने की चेष्टा बहुत बड़ी भूल होगी। मैं बोर्ड के इस दृष्टिकोण से सहमत हूँ और विश्वास करता हूँ कि इस समस्या का एकमात्र यही युक्तिसगत हल है। " वैज्ञानिक पारिभाषिक शब्दावली मंडल ने सुझाव दिया कि यदि कोई शब्द यूरोप की कम - से कम तीन भाषाओं में लगभग उसी रूप में मिलता हो तो उसे अंतर्राष्ट्रीय शब्द मान लेना चाहिए। " सकिन यह सुझाव संतुष्ट नहीं कर पाता। पर तो यह है कि अंतराष्ट्रीय शब्दावली की संकल्पना केवल एक आदर्शया , जिसका कोई व्यवहारिक रुप संभव न था।

३) प्रयोगवादी हिंदुस्तान विचारधारा :-

प्रयोगवादी दृष्टि को अपनाते हुए मिले - जुले हिंदुस्थानी अपना उर्दू के राब्द लेकर पारिभाषिक इस विचारधारा के आधार पर पं . सुंदरलाल डॉ . जाकर हुसैन , हिंदुस्थानी कस्बर सोसाइटी तथा उस्मानिया विभाषियालय , हैदराबाद आदि ने शब्दों का निर्माण किया । इस विचारधारा के अंतर्गत देश की सामाजिक संस्कृति को ध्यान में रखते हुए संस्कृत , अरबी - फारसी , तुकी , अंग्रेज़ी , तद्भव , देशज एवं अन्य प्रचलित भाषा तत्वों को लेकर शब्दों के निर्माण का प्रयास किया गया । इस विचारधारा को अपनाकर विदवानों ने शब्द के निर्माण के लिए जो सिदधांत अपनाये ये इसे प्रकार थे । २.आवश्यकतानुसार उर्दू , फारसी , हिंदी , तर्की आदि सभी भाषाओं के शब्दों का उदारतापूर्वक ग्रहण किया जो सकता है । २.राब्द चाहे किसी भी भाषा के हो , कित उन शब्दों तथा उनसे व्युत्पन्न शब्दों में उर्दू व्याकरण ३.जिस प्रकार पहले बिना सहायक क्रिया के संज्ञा क्रियाएं बनाई जाती थी , वैसे अब भी बनाई जाए । इससे लाभ यह होगा कि शब्द छोटे बनेंगे और उन्हें बोलने - लिखने में आसानी रहेगी ।

३) प्रयोगवादी हिंदुस्तान विचारधारा :-

४.जो शब्द पहले से चले आ रहे हैं और जो आज भी उसी तरह शुद्ध और उपयोगी हैं , उन्हें बिना किसी परिवर्तन के ले लिया जाएं । ५.अंग्रेजी भाषा के जो शब्द भाषा में स्वीकृत है या जिन शब्दों से व्युत्पन्न शब्द बनाये जा सकते है या जो आविष्कारों अथवा आविष्कारकों के नाम पर बने है उन्हें ज्यो - का - त्यों रहने दिया ६.पारिभाषिक शब्दावली के संबंध में यह ध्यान रहे कि शब्द कठिन और विशिष्ट होने चाहिए और यहाँ तक हो सके आम जनता की भाषा से दूर हो ताकि इलमी शान कायम रहे । इस प्रयोगवादी विचारधारी के तहत अधिकांश शब्दावली अटपटी और कहीं - कहीं हास्यास्पद है , इसीलिए यह पद्धति व्यावहारिक न हो सकी । कुछ शब्द देखें : reaction - पलटकारी , standardiz0 - स्टैडडियानो chairman - मसनदी , boiling point - उबलावनकता , Auditor General - सरपड़तालिया , bye - law - छुटकानूर , discipline = कायदादारी , literature - अदब साहित्य , communication = आवाजाई आदि ,

४) समन्वयवादी विचारधारा :-

प्रमुख तीन विचारधाराओं के अतिरिक्त एक चौथी विचारधारा और यी समन्वयवादी या कहें . मानादी विचारधारा । इस विचारधारा का अनुसरण मुख्यत : करकारी शब्द निर्माण संस्थानों ने किया । विचार बनाया

१. सर्वप्रथम हिंदी के उपलक शब्द - भंडार का उपयोग हो ,

२. तत्पथात् हिंदी में रच - बस यूके सभी देशी अन्य भरतीय भाषाओं तथा विदेशी शब्दो।

३. मजबूरी में यदि किसी अप्रचलित विदेशी शब्द को हिंदी में लेना पड़े तो उसका अनुकूलन

४. आयत आवश्यक होने पर विदेशी शब्दों को शुद्ध में ग्रहण कर लिया जाए । भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावेली आयोग ' एवं ' केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने भी अपनी शब्दावली के निर्माण में उपर्युक्त विचारधारा को अपनाया है ।

३. मजबूरी में यदि किसी अप्रचलित विदेशी शब्द को हिंदी में लेना पड़े तो उसका अनुकूलन

४. आयत आवश्यक होने पर विदेशी शब्दों को शुद्ध में ग्रहण कर लिया जाए । भारत सरकार के वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावेली आयोग ' एवं ' केंद्रीय हिंदी निदेशालय ने भी अपनी शब्दावली के निर्माण में उपर्युक्त विचारधारा को अपनाया है ।

धन्यवाद...

अस्वीकरण

निम्नलिखित वीडियों विभिन्न पुस्तकों , मीडिया , इंटरनेट अंतरिक्ष , आदि से एकत्र किए गए शोध और केस स्टडीज पर आधारित है । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो में निहित जानकारी की सटीकता , सामग्री , पूर्णता , वैधता या विश्वसनीयता के लिए किसी भी जिम्मेदारी या दायित्व को स्वीकार नहीं करते हैं । वीडियो पूरी तरह से शैक्षिक उद्देश्यों के लिए बनाया गया है और किसी व्यक्ति , व्यक्तियों , संस्था , कंपनी या किसी के शरीर को नुकसान पहुंचाने , चोट पहुंचाने या बदनाम करने के इरादे से नहीं बनाया गया है । इस वीडियो का उद्देश्य किसी भी धर्म , समुदायों या व्यक्तियों की अफवाहों को फैलाना , अपमानित करना या उन्हें चोट पहुंचाना या किसी व्यक्ति (जीवित या मृत) के प्रति असहमति पहुंचाना नहीं है , दर्शक को हमेशा अपना परिश्रम करना चाहिए और जो कोई भी इसमें शामिल होना चाहता है वीडियो में इसके लिए पूरी जिम्मेदारी लेता है । साथ ही , यह उनके स्वयं के जोखिम और परिणामों पर किया जाता है । इस वीडियो में शामिल सामग्री किसी भी क्षेत्र में सेवाओं या प्रशिक्षित पेशेवरों के लिए प्रतिस्थापन या प्रतिस्थापन नहीं कर सकती है , लेकिन वित्तीय , चिकित्सा , मनोवैज्ञानिक या कानूनी मामलों तक सीमित नहीं है । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और निर्माता वीडियो पर आधारित किसी भी कार्रवाई के प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्पन्न होने वाले किसी भी प्रत्यक्ष , अप्रत्यक्ष , निहित , दंडात्मक , विशेष , आकस्मिक , या अन्य के लिए जिम्मेदारी नहीं लेते हैं । डॉ । संतोषकुमार यशवंतकर और वीडियो के निर्माता किसी भी तरह के परिवाद , निंदा या किसी अन्य प्रकार के दावे या किसी भी प्रकार के दावे को स्वीकार करते हैं । दर्शकों को विवेक की सलाह दी जाती है शर्तें लाग करें ।

इस व्हिडियों / PPT का उदेश्य केवल अध्यापन के लिए है, न कि प्रसिद्धी पाने के लिए। इसका समग्र श्रेय सभी महानुभवों को जाता है जिन-जिनकी सामग्री का उपयोग यह बनाने के लिए हुआ है। मैं उन समस्तजनों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ जिनकी सामग्री का उपयोग यह व्हिडियों / PPT के लिए हुआ है। यह मेरी कोई मौलिक उपलब्धी नहीं है और न ही कोई सृजनात्मकता। इस का उदेश्य केवल और केवल छाञों तक पहुँचाना हैं। इससे किसीके दिल को प्रत्यक्ष या परोक्षरुप से कोई ठेस या आहत पहुँचती है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हुँ - आपका प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर

JAI BHAWANI SHIKSHAN PRASARAK MANDAL'S

ARTS & SCIENCE COLLEGE SHIVAJINAGAR, GADHI

जय भवानी शिक्षण प्रसारक मंडळ, गेवराई संचलित (कला व विज्ञान महाविद्यालय शिवाजीनगर, गढी ता.गेवराई जि.बीड)

प्रा.डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर